ज्ञान तत्व अंक 138

(क) लेख–व्यक्ति, परिवार और समाज ।

(ख) कार्यालयीन प्रश्नों के उत्तर ।

(ग) श्री अमर सिंह आर्य, सी–12 महेशनगर, जयपुर, राजस्थान। द्वारा पांच प्रश्न और मेरा विस्तृत उत्तर ।

(घ) श्री जमना लाल जैन, अभय कुटीर सारनाथ, वाराणसी। द्वारा प्रश्न और मेरा उत्तर ।

(च) श्री विमलचन्द्र पाण्डेय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश। द्वारा सोहराबुद्दीन शेख मुठभेड़ काण्ड पर प्रश्न और मेरा उत्तर ।

(छ) श्री राधाकृष्ण गेरा, अशोक विहार फेज। दिल्ली। द्वारा प्रश्न और मेरा उत्तर ।

ज) श्री नरेन्द्र दवे, महाराष्ट्र द्वारा गांधी की प्रशंसा पर प्रश्न और मेरा उत्तर ।

(झ) श्री वेद व्यथित, अनुकम्पा, फरीदाबाद हरियाणा। का प्रश्न और मेरा उत्तर ।

(ट) श्री पंचम भाई हस्तेड़िया, हस्तेड़ा, राजस्थान। का प्रश्न और मेरा विस्तृत उत्तर ।

(ठ) दशा और दिशा ।

(क) व्यक्ति, परिवार अैर समाज

भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है कि यहां व्यक्ति, परिवार, समाज और राज्य की अधिकारों की स्पष्ट सीमाएं रही है। धर्म सिर्फ कर्तव्य की प्रेरणा मात्र देता था, किन्तु हस्तक्षेप कभी नहीं करता था। समाज, व्यक्ति और परिवार को अनुशासित करता था। नियंत्रित नहीं क्योंकि व्यक्ति और परिवार के अधिकारों की अपनी स्वतंत्र सीमाएं थीं। व्यक्ति और परिवार पर नियंत्रण का दायित्व राज्य का था। जो व्यक्ति या परिवार द्वारा अपने अधिकारों का उल्लंघन करने पर दण्ड देता था। राज्य के पास सर्वोच्च शक्ति होते हुए भी न्यूनतम हस्तक्षेप था।

कई सौ वर्षों की मुस्लिम गुलामी में धर्म ने समाज को तोड़ा। धर्म, समाज परिवार और व्यक्ति का मार्गदर्शक, न होकर नियंत्रक बन बैठा। मुस्लिम गुलामी का हिन्दू जनमानस पर भी प्रभाव पड़ा और कुछ संगठन तो भारत में समाज और धर्म के अन्तर को ही समाप्त करके धर्म को राज्य के साथ जोड़ने की मांग करने लगे हैं जो अप्रत्यक्ष इस्लामिक समाज व्यवस्था है। हिन्दू और राष्ट्र शब्दों को एक साथ जोड़ने में कोई संस्कृति है या चिन्तन यह मुझे लेशमात्र भी नहीं दिखा। इस्लाम की बढ़ती ताकत से आतंकित कुछ लोगों ने धर्म राज और समाज को जोड़ने में कोई संस्कृति है या चिन्तन यह मुझे लेश मात्र भी नहीं दिखा। इस्लाम की बढ़ती ताकत से आतंकित कुछ लोगों ने धर्म राज्य और समाज को जोड़ने की जल्दबाजी करके भारतीय संस्कृति को कमजोर ही किया है मजबूत नहीं।

जब भारत अंग्रेजों का गुलाम हुआ तो उन लोगों ने भारत की छिन्न–भिन्न समाज व्यवस्था में से परिवार व्यवस्था को कमजोर करना शुरू किया। व्यक्ति स्वातंत्र को मजबूत किया गया। सम्पत्ति को व्यक्तिगत किया गया। विवाह पद्धति से परिवार और समाज को दूर किया गया। नये–नये कानून बनाकर समाज व्यवस्था को भी कमजोर किया गया और परिवार व्यवस्था को भी।

स्वतंत्रता के पूर्व भारतीय समाज व्यवस्था इस्लामिक धर्म का आक्रमण झेल चुकी थी और पश्चिम के व्यक्ति स्वातंत्र को भी। स्वतंत्रता के बाद समाज व्यवस्था को मजबूत करने का बीड़ा उठाया गांधी जी ने किन्तु धर्म और राष्ट्र को यह विचार पसंद नहीं आया। समाज और परिवार व्यवस्था की भ्रूण हत्या कर दी गयी और समाजवाद के नाम

से एक नया छल प्रकट हुआ। जिसने समाजवाद के नाम से समाज पर राज्य का नियंत्रण कर लिया। राज्य के नियंत्रण में जो कुछ किया गया उसका छलपूर्वक नामकरण राष्ट्रीयकरण रख दिया गया। परिवार व्यवस्था और समाज व्यवस्था को राज्य के अधीन करने के लिए हिन्दू कोड बिल से शुरूआत की गयी जो धीरे–धीरे बुलडोजर की भांति समाज और परिवार व्यवस्था को कुचलती चली गयी। भारतीय संविधान में योजना पूर्वक परिवार गांव और जिले को बाहर करके पश्चिम के लोकतंत्र, इस्लाम के धर्मतंत्र और साम्यवाद के राज्यतंत्र की खिचड़ी थोप दी गयी और उस खिचड़ी का नाम रखा गया, समाजवाद जबकि इस खिचड़ी में समाज व्यवस्था से कोई लेना–देना नहीं था। सच्चाई तो यह रही कि समाज व्यवस्था छिन्न–भिन्न करने में समाजवाद के समाज शब्द का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। धीरे–धीरे समाज शब्द अपना अर्थ खो बैठा। अब तो स्थिति यहां तक आ गयी है कि कई जातियों ने ही अपने नाम के साथ समाज शब्द लगाना शुरू कर दिया है जबकि समाज शब्द से जाति धर्म का कोई रिश्ता नहीं होता। मैं आजकल जब भी किसी उच्च स्तर के राजनेता का भाषण सुनता हूं तो ये राष्ट्र और समाज शब्द को इस तरह एक साथ जोड़कर बोलते हैं जैसे कि या तो दोनों समानार्थी हों या वक्ता दोनों का अन्तर ही न समझाता हो।

आज दुनिया की संस्कृतियां अपने–अपने आधार पर प्रतिस्पर्धा में संलग्न हैं। लोकतंत्र, इस्लाम और साम्यवाद की संयुक्त खिचड़ी भारत की परिवार व्यवस्था और समाज व्यवस्था को समाप्त कर रही है। आज तक भारत में परिवार व्यवस्था, समाज व्यवस्था कभी इतनी कमजोर नहीं रही जितनी आज है। मुस्लिम शासन काल और अंग्रेजों के समय भी नहीं आज तो हाल यह है कि भारत की समाज व्यवस्था पर पश्चिम के (1) लोकतंत्र, (2) साम्यवाद के राजतंत्र और (3) इस्लाम के धर्मतंत्र के लगातार आक्रमण तो हो ही रहे हैं, भारत के अन्दर से भी राष्ट्र, समाजवाद और संस्कृति जैसे भारी–भरकम सम्मानजनक शब्द उसे अर्थ भ्रमित कर रहे हैं।

समाज व्यवस्था में व्यक्ति, परिवार और समाज के अधिकारों की बिल्कुल अलग–अलग सीमाएं हैं। स्वामी दयानन्द ने इस सीमाओं को आर्य समाज के दसवें नियम में स्पष्ट किया था कि व्यक्ति व्यक्तिगत मामलों में निर्णय करने के लिए पूर्ण स्वतंत्र होगा और सर्व हितकारी मामलों में निर्णय करने के लिए पूर्ण परतंत्र। गांधी जी ने इस परिभाषा को और स्पष्ट किया कि गांव को गांव सम्बन्धी मामलों में निर्णय की पूर्ण स्वतंत्रता ही आदर्श व्यवस्था है जिसमें प्रत्येक परिवार की स्वीकृति अनिवार्य है। विनोबा जी ने और साफ किया कि गांव को सर्वसम्मति से गलती करने तक की आजादी ही लोक स्वराज्य है। हम लोगों ने पन्द्रह वर्षों के अनुसंधान के बाद परिभाषा बनायी कि प्रत्येक ईकाई को अपने इकाईगत निर्णय की स्वतंत्रता ही लोक स्वराज्य हैं। शब्द भले ही बदल गये हों पर भावार्थ सबका एक ही है कि समाज व्यवस्था मजबूत हो, धर्म और राज्य उसके सहायक तथा व्यक्ति और परिवार उसके सहभागी। भारत की समाज व्यवस्था को कहीं भी व्यक्ति की सहमति के बिना दण्ड देने का प्रावधान नहीं था। दण्ड तो केवल राज्य ही दे सकता था। व्यक्ति के व्यक्तिगत और परिवार के पारिवारिक मामलों में समाज को न हस्तक्षेप का अधिकार था न दण्ड का। आज तो सीमाएं इस तरह टूट रही है कि अन्तरजातीय विवाह के नितान्त पारिवारिक या व्यक्तिगत मामले में भी खाप पंचायतें दण्ड घोषित कर रही हैं, मृत्युदण्ड तक भी। जबकि समाज को बिना सहमति के कोई दण्ड देने का अधिकार ही नहीं था। कुछ पारंपरिक जातीय पंचायतों ने स्वयं को समाज घोषित कर दिया और कुछ राज्य घोषित पंचायतों ने स्वयं को राज्य का प्रतिनिधि घोषित कर दिया है जो दोनों ही गलत है।

समाज और परिवार व्यवस्था को तोड़ कर व्यक्ति और राज्य के रूप में ध्रुवीकृत करने का योजनाबद्ध षड़यंत्र पूरे भारत में चल रहा है। धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्रीयता, आर्थिक असमानता और उत्पादक उपभोक्ता के नाम पर समाज को तोड़ने के प्रयत्न जारी

हैं तथा लिंग और उम्र के नाम पर परिवार में असंतोष और विघटन के बीज बोये जा रहे हैं। बलात्कार, आतंकवाद और भ्रष्टाचार पूरी तरह राज्य के दायित्व हैं जो समाज की शक्ति से ऊपर के विषय है। समाज में घटता–बढ़ता लिंगानुपात समाज का विषय है और विवाह, दहेज या पर्दाप्रथा परिवारों का आन्तरिक मामला। भारत में लगातार बढ़ रहे आतंकवाद, बलात्कार और भ्रष्टाचार के कारण राष्ट्रपति जी, प्रधानमंत्री जी या सोनिया जी को शर्म नहीं महसूस हो रही है, किन्तु परिवारों के असंतुलित लिंगानुपात, दहेज और पर्दा प्रथा के कारण इन नेताओं को पूरी दुनिया में शर्मिन्दगी झेलनी पड़ रही है। ऐसा लगता है कि हमारे ये नेता बलात्कार, आतंकवाद और भ्रष्टाचार रोकने में असफल होने के कारण दहेज और लिंगानुपात को समस्या घोषित करके अपनी वास्तविक शर्मिन्दगी को नकली शर्मिन्दगी में बदलने का प्रयत्न कर रहे हैं। सोनिया जी को तो परिवार व्यवस्था की भारतीय संस्कृति का अनुभव उतना नहीं, किन्तु बाकी सबको तो है। फिर क्या कारण है कि समाज गांव और परिवार के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के लिए हमारे राजनेता बहाने ढूंढ़ते रहते हैं, जबकि न्याय और सुरक्षा के मामले में इनकी सारी मानवीय संवदेना मर जाती है। हमारे देश के राजनीतिज्ञ सिर्फ राजनीति से भ्रष्टाचार ही दूर कर कवे` बहुत बड़ी बात हो सकती है, किन्तु हमारे देश के राजनीतिज्ञ राजनीति के अपराधीकरण के सीान पर समाज की सामाजिक विकृतियों के कारण दुबले हुए जा रहे हैं।

राजनेताओं ने तो भारतीय समाज परिवार गणराज्य व्यवस्था को तोड़ने का धूर्ततापूर्ण षड़यंत्र जारी रखा है, किन्तु हमारे धर्म संस्कृति प्रमुखों को क्या हो गया है कवे भी समाज, ग्राम, परिवार गणराज्य व्यवस्था को कमजोर करने में लगे हुए हैं। सच्चाई यह है कि राजनीति और राजनीतिज्ञों से सम्पूर्ण समाज व्यवस्था या परिवार व्यवस्था को खतरा पैदा हो गया है। राष्ट्र, धर्म और संस्कृति के नाम पर उस खतरे को भ्रमित किया जा रहा है और समाज गांव परिवार असहाय हैं। अब तक तो व्यक्ति परिवार और समाज के अधिकारों की कोई स्पष्ट व्याख्या या सीमाएं ही समाज में स्पष्ट नहीं दिखती तो कहां से पहल की जाये यह चिन्ता विषय है। धर्म संस्कृति राष्ट्र आदि शब्द समाज को और राजनीति तो सम्पूर्ण परिवार समाज व्यवस्था को निगल कर आत्मसात करने को व्याकुल हैं। समाज को इस सम्बन्ध में चिन्ता करनी चाहिए। क्योंकि समय रहते समाज ने परिवार व्यवस्था को राजनीति से नहीं बचाया तो भारत की परिवार व्यवस्था को राजनीति से नहीं बचाया तो भारत की परिवार व्यवस्था का भी वही हाल होगा जो समाज व्यवस्था का हो रहा है।

(ख) कार्यालयीन प्रश्नों के उत्तर

प्रश्नः– 1 मानवीय राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने शपथ लेने के बाद महिला सशक्तीकरण और कन्या भ्रूणहत्या को रोकने को उच्च प्राथमिकता की बात की। आपके क्या विचार हैं? किरण वेदी जी ने भी अपने साथ हुए पक्षपात के विरूद्ध आवाज उठाई है। उस पर प्रकाश डालें।

उत्तरः– राजनीति का एक विशेष चरित्र होता है कि वह कम महत्वपूर्ण समस्याओं को चर्चित बनाकर आवश्यक समस्याओं को पीछे धकेल देते हैं। मैंने सत्ताइस जुलाई के अखबार में सोनिया जी के विचार भी पढ़े। वे भी कन्या भ्रूणहत्या और महिला सशक्तीकरण के प्रति बहुत चिन्तित थीं। राष्ट्रपति जी भी चिन्तित थी ही। मेरे समझ में नहीं आया कि ये लोग समस्याओं के समाधान से मुंह क्यों चुरा रहे हैं। न सोनिया जी को आतंकवाद, भ्रष्टाचार, चरित्रपतन की चिन्ता दिखी न ही प्रतिभा जी को। समाज में वर्गभेद पैदा करके उसे सर्वोच्च आवश्यकता सिद्ध करने की सोची समझी साजिश के अन्तर्गत काम हो रहा है। समाज को वर्गों में बांटकर वर्ग संघर्ष की भूमिका को प्रोत्साहित करना तो साम्यवादी कार्ययोजना का हिस्सा होता है। सोनिया जी और प्रतिभा

जी को विघटन कारी प्राथमिकताओं से बचना चाहिए। यदि भारत की सभी समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर क्रमबद्ध करें तो कन्या भ्रूणहत्या सौवें नम्बर पर आ सकती है। ऐसी समस्या को भावनात्मक स्वरूप देकर महत्वपूर्ण घोषित करना ठीक नहीं।

किरण वेदी एक सम्मानित पुलिस अधिकारी रही हैं। उन्होंने पहले संघर्ष किया तब उन्हें सम्मान मिला। उन्होंने जीवन भर समाज के लिए संघर्ष किया। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूं। उन्होंने प्रारंभिक जीवन से ही कर्तव्य किया, अधिकारों की चिन्ता नहीं की। अधिकार तो उन्हें अपने आप मिलते चले गये।

पिछले कुछ वर्षों से उन्होंने समाज की चिन्ता छोड़कर महिलाओं की चिन्ता शुरू कर दी। इस बात तो उनका ऐसा अधःपतन हुआ कि वे अपनी व्यक्तिगत चिन्ता पर उतर आईं। कहां तो समाज के लिए संघर्षरत किरण वेदी और कहां अपने पद के लिए संघर्षरत किरण वेदी। क्या किरण वेदी के साथ होने वाला अन्याय इतना गम्भीर है कि समाज उसे गंभीर समस्या मान लें?

आज समाज में एक गलत परम्परा चल पड़ी है कि यदि किसी का सम्मान कर दिया जाये तो वह अपने सम्मान को व्यक्तिगत लाभ में बदलने का प्रयास शुरू कर देता है। किरण वेदी जी को पुरूषों ने कभी विरोधी नहीं माना न ही उनकी प्रगति में बाधा उत्पन्न की। आज यदि किसी प्रशासनिक स्वार्थ के अन्तर्गत उनके साथ किचिंत अन्याय हुआ तो इतना हो हल्ला उचित नहीं था। लगता है कि किरण वेदी ने समाज में जो कुछ भी किया वह सामाजिक भावना कम और प्रगति की भावना अधिक थी। यदि आप अपनी उन्नति भाव से समाज सेवा करते हैं तो वह सम्मान योग्य कार्य न होकर प्रतिस्पर्धा है। मैंने किरण वेदी की कई बार प्रशंसा की है, किन्तु इस बार उन्होंने जैसा स्वार्थपूर्ण प्रदर्शन किया वह उनकी गरिमा के प्रतिकूल माना जाना चाहिए। उचित तो यह होता कि किरण वेदी जी के साथ हुए अन्याय के विरोध में समाज आवाज उठाता और किरण जी शालीन बनी रहतीं। इसके बदले में हुआ उल्टा। मेरे विचार किरण वेदी जी से भूल हुई है जो उचित नहीं है। किरण वेदी जी से समाज को बहुत आशाएं रही है। अब भी बहुत आशाएं हैं। समाज के आदर्श प्रस्तुत करना आवश्यक है। मुझे खुशी है कि उन्होंने भूल सुधार भी की है।

महिलाओं को समाज में समान व्यवहार मिले, उनकी सम्मानजनक स्थिति बने यह आज की आवश्यकता है। यह समाज का कर्तव्य भी है, किन्तु महिलाएं इसके लिए समाज में छीना–झपटी करें इससे धूर्त महिलाएं मजबूत होंगी और शालीन कमजोर। महिलाओं को समान अधिकार भी चाहिए विशेष अधिकार भी यह टकराव दूरगामी नुकसान कर सकता है। कन्या भ्रूण हत्या को महिला अत्याचार से अलग हटकर देखने की जरूरत है।

प्रश्न–2 जनसत्ता एक अगस्त दो हजार सात के पृष्ठ छः पर एक साथ दो लेख छपे। एक जगमोहन सिंह राजपूत का और दूसरा अपूर्वानन्द जी का। दोनों की अपनी–अपनी पहचान बनी हुई है। दोनों ही लेख बिलकुल विपरीत मुद्दों पर लिख रहे हैं। राजपूत जी ने सर्वोदय आश्रम सेवाग्राम के त्याग को उछालते हुए अनुकरणीय बताया है कि और दूसरे लेख में हर्षमंदर जी को जनसेवा के लिए विदेशी धन मांगने वालों की असफल कतार में छटपटाते लोगों में। हर्षमंदर जी गांधी वादी विचारों के रहे हैं और राजपूत जी भिन्न विचारों के। आप इन दोनों भिन्न विचारों की समीक्षा करें–

उत्तर– भारत में गांधी नाम से इर्द–गिर्द दो समूह काम कर रहे हैं। (1) गांधी को गाली देने वालों का (2) गांधी को गाली देने वालों को गाली देने वालों का पहला ग्रुप भावना प्रधान है, कम दिमाग वाला है, जिद्दी है और दूसरा ग्रुप बुद्धिप्रधान है, बहुत चालाक है, परिस्थिति अनुसार रंग बदलने वाला है। पहला ग्रुप नाम शिवाजी का लेता है और स्वभाव महाराणा प्रताप का है जबकि दूसरा ग्रुप शिवाजी का विरोध करता है किन्तु स्वभाव बिल्कुल वैसा ही है। स्वतंत्रता के बाद साठ वर्षों में पहले ग्रुप के लोग गांधी की अच्छाईयों को बुराइयां प्रमाणित करने की असफल कोशिश करते रहे जबकि दूसरे ग्रुप ने

गांधी की प्रशंसा करते हुए गांधी के सत्य और अहिंसा को खत्म कर दिया। आज भी पहला ग्रुप गांधी को अनावश्यक गाली देकर प्रसन्न होता है और दूसरा ग्रुप गांधी वादियों के साथ मिलकर उनको ठगता रहता है।

जनसत्ता में दो लेख है उसमें से एक में सेवाग्राम आश्रम को भारत सरकार द्वारा दिये गये पांच करोड़ के दान के अस्वीकार की प्रशंसा की गई है और दूसरे में सरकार की आई.ए.एस. की नौकरी छोड़कर समाज सेवा के क्षेत्र में सक्रिय हर्षमंदर जी की। मेरा सेवाग्राम आश्रम से भी निकट का परिचय है और हर्षमंदर जी से भी। जब हर्षमंदर जी ने नौकरी छोड़कर सेवा की घोषणा की तो गांधी वादियों ने उनके त्याग की भूरि–भूरि प्रशंसा की थी। मैंने उस बैठक में दबी जुबान से ही संदेह व्यक्त किया था, क्योंकि हर्षमंदर जी हमारे क्षेत्र के लम्बे समय तक कमिश्नर रहे हैं। मैं उनके बुद्धि कौशल का भी जानकार रहा हूं। और त्याग के व्यवसाय का भी। आज वह बात स्पष्ट हो रही है जब अपूर्वानन्द जी ने जानकारी दी कि हर्षमंदर जी ने भारत में जनसेवा करने के लिए विदेशी धन मांगने तक की बहुत कसरत की और भारत सरकार ने स्वीकृति देने से इन्कार कर दिया। फिर भी हर्षमंदर जी विदेशी धन लेने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं।

विचारणीय यह है कि सर्वोदय आश्रम ने भारतीय धन को लेने से इनकार करके उचित किया या हर्षमंदर जी ने प्रयत्न करें? सेवाग्राम आश्रम में भी बहुमत लेने वालों के पक्ष में था, किन्तु एक दृढ़ आत्मा ने न लेने वालों का पक्ष मजबूत कर दिया और साठ वर्षों बाद सेवाग्राम आश्रम ने गांधी को मरने से बचा लिया अन्यथा पूरे भारत में हजारों ऐसी दुकानें खुली हुई है जो जन सेवा के व्यापार में संलग्न है। इनमें कई संस्थाएं गांधी के नाम पर कर रही है और कुछ तो ऐसी भी है जो विदेशों से भी धन लेने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। ऐसी संस्थाएं भी यदि विदेशों से धन लेकर कुछ सेवा कार्य शिक्षा, स्वास्थ्य आदि में लगें तो यह कार्य उतना निन्दनीय नहीं, क्योंकि उन्होंने सेवा मार्ग चुना है। किन्तु यदि कोई संस्था विदेशों से धन लेकर भारत की समाज व्यवस्था को तोड़ने की राजनीति करे तब तो अवश्य ही चिन्ता की बात है। भारत सरकार ने हर्षमंदर जी के प्रयत्नों को अनुचित घोषित करके धन देने की स्वीकृति देने से अस्वीकार कर दिया है।

मेरी इच्छा है कि आज समाज में सेवा और सेवा के व्यवसाय के बीच विभाजन करने की आवश्यकता है। सेवाग्रम के त्याग की यदि तुलना न भी हो तो कम से कम सेवा और व्यवसाय बनाने वालों से तो बचना ही चाहिए। भारत सरकार ने ऐसी पहल की है तो उसके लिए वह बधायी की पात्र है।

पत्रोत्तर

(ग) – श्री अमर सिंह आर्य, सी–12 महेशनगर, जयपुर, राजस्थान।

आप बहुत गंभीर टिप्पणी करते हैं। सहमति असहमति अलग विषय है, किन्तु सोचना आवश्यक हो जाता है। वर्तमान राजनैतिक, सामाजिक वातावरण में कुछ प्रश्न उठे जिनका उत्तर देने की कृपा करें।

प्रश्न–1 अभी हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रपति जी के यहां फांसी पर दया याचिका की समय सीमा तय करने की जनहित याचिका निपटाने हेतु समय सीमा तय करने से इंकार कर दिया, कहीं न्यायपालिका का इस माध्यम से समय सीमा में निपटाने की जिम्मेदारी से बचने का प्रयास तो नहीं।

प्रश्न– 2 सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रपति पद की प्रत्याशी श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा सहकारी बैंक चीनी मिल घोटाला हत्या के आरोप भाई की मदद की सार्वजनिक याचिका साक्ष्य के अभाव में खारिज कर दी। क्या सर्वोच्च अदालत का यह दायित्व नहीं बनता कि वह आरोपों की सत्यतता तक जाती और प्रयास करती ताकि संदिग्ध व्यक्ति सर्वोच्च पद पर चुना जा सके।

प्रश्न– 3 हर मंत्री राजनेता, मीडिया में छाये रहना चाहता है श्रीमती रेणुका चौधरी महिला बाल विकास मंत्री ने सतीप्रथा, एड्स प्रभावित लोगों से भेदभाव न हो ऐसा कानून बनाने की मन्शा जतायी, कानून सतीप्रथा रोकने में सफल नहीं रहा।
प्रश्न– 4 भारत के करीब डेढ़ सौ विद्वानों ने एक पत्र पर हस्ताक्षर करके मांग की है कि अप्राकृतिक संभोग की छूट दी जाये और धारा तीन सौ सतहत्तर को समाप्त कर दिया जावे। मेरे विचार में यह मांग घोर अनैतिक है। आपके विचार क्या हैं?
प्रश्न– 5 टाइम्स आफ इण्डिया के बीस जुलाई के अंक में लेखिका ज्योति पुंजवानी ने सिमी से जुड़े आतंकवादी फारूख एवं रिजवान अब्दुल्ला का बचाव किया है और नरेन्द्र मोदी की आलोचना की है। मुझे ऐसा लगता है कि भारत में लेखकों का एक वर्ग किसी न किसी रूप में घुमा–फिराकर मोदी की आलोचना अवश्य करता है चाहे संदर्भ हो या न हो। ऐसा क्यों?
उत्तर– (1) न्यायपालिका की अपनी सीमाएं हैं। न्यायपालिका टकराव से बच रही है या सीमाओं से बंधी है यह बहुत विस्तृत विवेचना का विषय है और इतनी विस्तृत विवेचना का कोई उद्देश्य तत्काल नहीं है। राष्ट्रपति पद की प्रत्याशी प्रतिभा पाटिल के संबंध में न्यायपालिका के निर्णय को मैं ठीक मानता हूं। साक्ष्य के अभाव में मामले की स्वप्रेरणा से जांच करते जाना सामान्तया कोई अच्छी परम्परा नहीं है।
(3) सतीप्रथा को रोकने के कानून अनावश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति को आत्महत्या के लिए प्रोत्साहित करना या महिमामण्डित करना अपराध है। चाहे वह सती प्रकरण हो या कोई और। चौथे प्रश्न पर इसकी और चर्चा होगी।
(4) हम लोगों में एक खास बीमारी घर कर गयी है कि हम हर सामाजिक समस्या को कानून से हल करना चाहते हैं जिन डेढ़ सौ विद्वानों ने अप्राकृतिक मैथुन के पक्ष में लिखा उससे मैं असहमत हूं। अप्राकृतिक मैथुन एक अस्वाभाविक क्रिया है जिसे निरूत्साहित किया जाना चाहिए। किन्तु मैं इन विद्वानों की इस बात से सहमत हूं कि शासन इस स्वतंत्रता के विरूद्ध तब तक हस्तक्षेप न करे जब तक बल प्रयोग न हो या किसी नाबालिग के साथ ऐसा हो। सरकार का काम सामाजिक समस्याओं में हस्तक्षेप करना नहीं होना चाहिए।

मेरा यह मत है कि विवाह, तलाक, पति, पत्नी सम्बन्ध आदि विषय नितान्त पारिवारिक है। वैश्यावृत्ति, बार बालाएं अथवा ऐसे अन्य मामलों से भी सरकार को हट जाना चाहिए। बलात्कार के अतिरिक्त सभी कानून अनावश्यक हैं। इन कानूनों ने समाज में समाधान तो किया कम और टकराव पैदा किया ज्यादा। मैं इसे गलत मानता हूं। ये सभी विकृतियां सामाजिक है जिसका समाधान समाज को करना है कानून को नहीं। शिथिल इन्द्रिय बूढ़े सबसे अधिक नैतिकता का शोर मचाते हैं। ये बूढ़े यदि किसी धर्म संस्था से जुड़ जावें तो और अधिक कठोर कानून की सिफारिश करते हैं। स्वयं का आचरण तो कभी इतना प्रभावी रहा नहीं कि एक मुहल्ले पर भी प्रभाव डाल सकें। इसलिए मन ही मन घुटते रहते हैं और कुछ न कुछ मांग करके अपने चरित्र की श्रेष्ठता बताते रहते हैं। प्रश्न उठता है कि अप्राकृतिक मैथुन के लिए कानून क्यों? क्यों नहीं हम ऐसे मामलों में स्वयं कोई सामाजिक पहल करते? राज्य ने समाज को निगल लिया है और हम आप ऐसी–ऐसी मांगे उठा–उठाकर राज्य को मजबूत करने के अवसर प्रदान कर रहे हैं।

मैंने तीन–चार वर्ष पूर्व एक गंभीर लेख में लिखा था कि भारत की राजनैतिक गुलामी का प्रारम्भ उसी दिन शुरू हुआ जब ब्रह्म समाज राजाराम मोहन राय आदि ने सतीप्रथा जैसी सामाजिक बुराई को रोकने के लिए राज्य से निवेदन किया। आज भी मैं बहुत लोगों को इन महापुरूषों की प्रशंसा करते हुए पाता हूं। यदि ये महापुरूष सतीप्रथा सरीखी बुराई के विरूद्ध सामाजिक आन्दोलन करते तब तो ये प्रशंसा के पात्र थे, किन्तु इन लोगों ने तो इस बुराई का विरोध के करने के नाम पर राज्य जैसे

खतरे को आमंत्रित कर दिया। कानून के माध्यम से सामाजिक बुराईयों पर नियंत्रण का प्रयास उठना ही खतरनाक होता है जितना आपसी विवाद के समाधान में किसी विदेशी की घुसपैठ का आमंत्रण। इन महानुभावों द्वारा सतीप्रथा के बहाने राजनीति की घुसपैठ का स्पष्ट परिणाम हुआ कि भारत राजनेताओं का गुलाम हो गया। हो सकता है कि उन विद्वानों को ऐसे प्रयत्नों के गंभीर दुष्परिणाम का अनुमान न रहा हो। सतीप्रथा समाप्ति का लाभ भी आप देख रहे हैं और सामाजिक गुलामी के दुष्परिणाम भी। कई जगह मैं राजनैतिक एजेन्टों द्वारा इनकी प्रशंसा आज भी सुनता रहता हूं। मेरे विचार में गांधी जी ने भी दो भूलें की। (1) छुआछूत रोकने का कानून बनाने पर जोर देना (2) शराबबन्दी के कानून पर सहमति। इन दो कानूनों ने राज्य और समाज के अधिकारों की सीमाओं को गड्ड–मड्ड कर दिया। यदि गांधी जी जीवित रहते तो यह भूल अवश्य ही सुधार लेते। गांधी जी चरित्र बल को सामाजिक परिवर्तन का एक मजबूत हथियार मानते थे। सरकारी कानून की मांग करने वाले लोग तो निकम्मे होते हैं जो चरित्र का प्रभाव नहीं रखते। गांधी जी ऐसे नहीं थे। अब भी हम देखते हैं कि हर सामाजिक काम कानून से करने की मांग करने वाले लोगों की भारत में तो बाढ़ आई हुई हैं हम आप जैसे लोगों को अपनी समीक्षा करनी चाहिए। (5) आपने ज्योति पुंजवानी की तटस्थता पर सवाल उठाया है। मैं स्वयं महसूस करता हूं कि ऐसे लेख एकपक्षीय होता है। भारत में बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है जो तटस्थ नहीं हैं। आपने जो पत्र लिखा वह कितना तटस्थ है यह आप स्वयं विचार करें। आपका पहला प्रश्न अप्रत्यक्ष रूप से अफजल की फांसी से जुड़ा है। दूसरा प्रतिभा ताई पाटिल के चुनाव से जुड़ा है। तीसरा रेणुका चौधरी के विरूद्ध है। चौथा भी वैसा ही है जिसमें अरूणाराय, कुलदीप नैयर, स्वामी अग्निवेष आदि के नाम डाले गये हैं। पाचवें में फारूख और रिजवान के विरूद्ध नरेन्द्र मोदी का पक्ष लिया गया है। इन पांच समीक्षाओं के बाद आप स्वयं समीक्षा करें कि आप कितने तटस्थ है? आप चाहे नरेन्द्र मोदी की कितनी भी प्रशंसा करें उससे कोई कठिनाई नहीं है, परन्तु आप तटस्थता की लाइन छोड़ दें यह उचित नहीं। आप कोई साधारण व्यक्तित्व नहीं है। क्या ही अच्छा हो यदि आप हिन्दू, मुसलमान, कांग्रेसी जनसंघी के एक पक्षीय भाव से ऊपर उठकर यथार्थ की स्थापना में हमारे साथ हों। काम बहुत कठिन है। पूरे भारत में सौ लोग भी इस दलदल से उठकर यथार्थ के साथ जुड़ने के लिए तैयार हो जायें तो पूरे समाज को मजबूत किया जा सकता है। आवश्यकता सिर्फ इतनी ही है कि संस्कारों पर विचारों को वरीयता की आदत डालें। आपसे मुझे बहुत उम्मीद है।

प्रश्न– (घ) श्री जमना लाल जैन, अभय कुटीर सारनाथ, वाराणसी।

ज्ञानतत्व के अंक 133, 134 और 135 मुझे मिले हैं। धन्यवाद।

मैंने तीनों अंक पढ़े हैं। आप स्वतंत्र चिंतक हैं। बिन किसी बार–विवाद में पड़ै सामाजिक दृष्टिकोण से अपने विचार प्रकट करते हैं, समीक्षा करते हैं यह प्रसन्नता की बात है।

भारत के संविधान में विगत आधी शताब्दी में पर्याप्त संशोधन आदि हो गये और राजनीतिक दल बहुमत के आधार पर मनचाहे संशोधन कर लेते हैं। मेरा तो ख्याल है कि एक नया और पक्का, सांस्कृतिक दृष्टि से संविधान बनाने का अधिकार केवल न्यायपालिका को होना चाहिए, संसद को नहीं।

हम नागरिक जो हैं, पर नागरिकता खो गयी है। कैसे हो गयी है। जाति, नोट, वोट राजनीतिज्ञों का आधार बन गया है। विद्वान, धनवान और बलवान सबके सब जंगल–जंगल भटक रहे हैं। स्थिरता, संतोष, धीरज कहीं नहीं है। यानी भाग्यशाली कोई रहा नहीं। क्या हम महाभारत की अंतिम परिणति देखने के लिए जीवित हैं।

मात्र साधक जी ने आपका परिचय दिया। अच्छा लगा। मैं तो सन् 1954 से 1980 तक सर्वसेवा संघ प्रकाशन वाराणसी में प्रबन्धक रहा। अभी–अभी वहां से पूज्य दादा

धर्माधिकारी के शताब्दी अवसर पर उनके लिखे संस्मरणों की पुस्तक 350 पृष्ठ की 'सत्यनिष्ठ विचार योगी' छपी है। मराठी से हिन्दी अनुवाद मेरा है।

उत्तर– भारत में समाज नियुक्तिकर्ता है और राजनीतिज्ञ नियुक्त। नियुक्तिकर्ता और नियुक्त के बीच एक अनुबन्ध है जिसे संविधान कहते हैं। यह राजनीतिज्ञों की चालाकी है कि उन्होंने संविधान रूपी उस अनुबन्ध में संशोधन के अधिकार अपने पास रख लिया जो स्वयं एक पक्ष है और स्वयं नियुक्त है। यह तो समाज के विरूद्ध षड़यंत्र है।

इसके संशोधन के तरीके क्या हों इस पर चर्चा जारी है। एक प्रस्ताव आया था कि एक सौ दस लोगों की एक संविधान सभा बने इसमें पूर्व राष्ट्रपति, पूर्व प्रधानमंत्री, पूर्व मुख्य न्यायाधीश तथा सौ बी.ए. से ऊपर चुने हुए प्राचार्य हों जिनका चुनाव भी ऐसे प्रोफेसर ही करें। यह एक सौ दस की कमेटी संसद के प्रस्ताव पर विचार करे और संसद तथा संविधान सभा की संयुक्त सहमति से ही संविधान संशोधन हो।

दूसरा सुझाव वेलजी भाई देसाई का उनकी पुस्तक बवदेजपजनजपवद वित Real Swaraj में लिखा है। उनके अनुसार संशोधन अस्सी प्रतिशत लोकसभा सांसदों, पचहत्तर प्रतिशत विधानसभाओं और पचहत्तर प्रतिशत जिला सभाओं से पारित हो।

तीसरा प्रस्ताव आपका है जिसमें न्यायालयों को अधिकार देने की बात कही गयी है। और भी प्रस्ताव होंगे जो अब तक मेरी जानकारी में नहीं है।

इस बात पर आम सहमति है कि संविधान संशोधन का असीम अधिकार राजनेताओं को नहीं दिया जा सकता, क्योंकि वे तो स्वयं ही उक्त संविधान द्वारा ही संचालित हैं, किन्तु प्रक्रिया के सम्बन्ध में विचार भिन्न–भिन्न है। चूंकि संविधान नियुक्त और नियोक्ता के बीच एक समझौता पत्र होता है इसलिए उसके संशोधन की प्रक्रिया भी दोनों पक्ष की संयुक्त सहमति से ही संभव है। इसके लिए एक ..... का प्रावधान करना चाहिए। इस सम्बन्ध में चर्चा जारी रहनी चाहिए।

प्रश्न– (च) श्री विमलचन्द्र पाण्डेय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।

सोहराबुद्दीन शेख मुठभेड़ काण्ड पर आपके विचार मिले। इसके पहले अंसल पलाजा मुठभेड़ पर आपने लिखा था कि कभी–कभी अनुचित रूप से आवश्यक कार्य करने पड़ते हैं। घटना की प्रकृति को देखकर यह समझा जा सकता है कि वहां कुलदीप नैय्यर जैसे लोग जायेंगे या नहीं। सरकार और सिद्धान्त कैसे भी हो अगर वे सैनिकों, पुलिस कर्मियों, समाज भक्तों की रक्षा नहीं कर सकते हैं तो अराजकता फेलेगी और शासन की आवश्यकता समाप्त हो जायेगी। आतंकवादियों को मारने वाले अजीत संधु ने सरकारी उत्पीड़न से क्षुब्ध होकर आत्महत्या कर ली और मसूद अजहर हमारी जेल से रिहा हो गया। धनंजय की फांसी औपचारिकता पूरी होते ही गयी और अफजल की फांसी रोकी जा रही है। एक आतंकवादी या एक अपराधी को मारने का मतलब हजारों निर्दोषों के प्राण बचाना कूर और बुरा करने वालों को हतोत्साहित करना।

समाज से स्वाध्याय और चिंतन का लोप ही स्वतंत्र विचारकों के उदय में बाधा उत्पन्न कर रहा है। आज विचारक मान कर प्रफुल्लित होते दिखते हैं आन पर टिकते नहीं। गांधी जी के 55 करोड़ की निंदा आपने कभी नहीं की। आज के युग में अन्तरजातीय, अंतरधार्मिक विवाहों को रोक पाना कठिन और अनावश्यक है। ऋषि दयानन्द का कथन कि '' दुनिया में शान्ति के लिए मानवकृत मजहबों का खण्डन आवश्यक है'' उचित प्रतीत होता है।

उत्तर– मैं आपके विचारों से सहमत हूं। अजीत संधू की आत्महत्या की घटना मुझे याद नहीं। कुछ विस्तृत लिखियेगा। किन्तु मसूद अजहर को रिहा करना बिल्कुल गलत था।

स्वाध्याय और चिन्तन की प्रक्रिया का लोप होना स्वतंत्र विचारकों के उदय में बाधा उत्पन्न कर रहा है। ज्ञानतत्व अंक एक सौ पैंतीस में मैंने प्रतिबद्ध विचारधारा को भी खतरनाक बताया है। विचारक प्रतिबद्ध नहीं हो सकता है यदि प्रतिबद्ध है तो विचारक नहीं हो सकता। विचारक को अप्रतिबद्ध होना चाहिए और दिखना भी चाहिए। यदि

उसकी अप्रतिबद्धता होते हुए भी दिख नहीं रही तो उसे सतर्कता पूर्वक आगे बढ़ना चाहिए। आपने स्वतंत्र विचार की आवश्यकता तो खूब बताई है, किन्तु आपके विचार स्वतंत्र हैं या प्रतिबद्ध इसमें मुझे सन्देह है, कुलदीप नैयर जी के विचार आपके विचारों के विपरीत झुके हुए हैं, किन्तु लगता है कि आप कुछ ज्यादा ही झुके हुए हैं।

आचार्य पंकज जी ने एक भाषण में मेरी तुलना घड़ी के पेण्डुलम से की थी। मुझे बुरा लगा। मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने बताया कि मैं अब भी अपनी बात पर कायम हूं कि आपके विचार हमेशा ही तो रहते हैं किन्तु निर्णय बिल्कुल ठीक देते हैं जैसे घड़ी का पेण्डुलम कई बार दोनों ओर हिलकर भी समय ठीक बताये। आप प्रयत्न करिये कि आपकी प्रतिबद्धता न झुकी हुई हो न वैसी दिखे।

पाकिस्तान को 55 करोड़ रूपया देने का गांधी जी का प्रस्ताव पूरी तरह उचित भी था और प्रासंगिक भी। वह रूपया पाकिस्तान का था, भारत का नहीं। दूसरा यथार्थ यह भी है कि वह रूपया भारत के पास अमानत था उधार नहीं। यदि भारतीय संस्कृति अमानत और उधार का अन्तर न समझे या अमानत में खयानत को भी रणनीति मान ले तो भारतीय संस्कृति और इस्लामिक संस्कृति में अन्तर ही क्या रह जायेगा। चोटी वाले मुसलमान और दाढ़ी वाले मुसलमान के बीच अन्तर क्या रह जायेगा। गोडसे से एक भूल हुई है। उसकी देशभक्ति और निष्ठा पर कोई उंगली नहीं उठी, किन्तु उसके निर्णय का तरीका कट्टरवादी था, गलत था, स्वतंत्र निर्णय की भारतीय परम्परा के प्रतिकूल था। इस्लामिक जेहादी था। जो लोग गोडसे की भूल को स्वीकार करके समाप्त करने की अपेक्षा जिद से या ताकत से सही सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं वे साठ वर्षों से तो नुकसान उठा रहे हैं और आगे भी उठाते रहेंगे। गांधी हत्या किसी भी तरह न उचित थी न ठहरायी जा सकती है, चाहे वह पचपन करोड़ रहा हो या पचन अरब। आपका उद्देश्य गांधी जी के कार्यों की भूलों पर चर्चा करना न होकर किसी न किसी रूप में गांधी हत्या का औचित्य सिद्ध करना है जो पूरी तरह गलत है।

आपसे निवेदन है कि विचार मंथन की प्रक्रिया को मजबूत करिये और विचारों के बीच संस्कारों को बाधक मत बनने दीजिए।

प्रश्न– (छ) श्री राधाकृष्ण गेरा, अशोक विहार फेज। दिल्ली।

आप द्वारा ज्ञानतत्व पढ़ने का अवसर कुछ समय से मिल रहा है। विभिन्न लेखकों के लेख एवं पत्रोत्तर पढ़ने का भी भाग्य मिला, लेकिन कहीं भी गम्भीरता, समस्याओं का वास्तविक रूप और उन पर आप का अपना सुझाव (समस्या और उसका समाधान) का अभाव प्रतीत होता है। सामान्य रूप में एक स्कूल अध्यापक की भांति ''प्रस्ताव (मैंल) लिखना मात्र ही प्रतीत होता है। जिसका लक्ष्य केवल लिखने का अभ्यास ही है। इससे भिन्न कुछ भी उपयोग नहीं प्रतीत होता। सिर्फ अपने आप को व्यस्त रखना ही लक्ष्य है।

अंक 129 पृष्ठ (18) में आपने लिखा है कि ''.......... गांधी जी के बताये मार्ग से ही संभव है .... किन्तु गांधी जी की मृत्यु के एक दिन बाद जो कुछ कहने वाले थे आदि की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। मृत्यु के पश्चात उनसे क्या अपेक्षा की जा सकती है। स्पष्ट करें।

सभी महाविभूतियां अपने समय पर परिस्थितियों के अनुरूप अपने अनुभव एवं विचार पर आचरण करके मार्ग दिखा गये। अब बारी तो करने की तत्कालीन महानुभावों की है। अभी तक कोई कर्मठ दिखा नहीं। प्रचारक (बातूनी) ही दिख रहे हैं। काम के समय वानप्रस्थ लेना ऐसा लगता है जैसे ''एमर्जेंसी'' में विनोबा भावे का मौन व्रत धारण करना। कर्महीन होगा। आपने लिखा है कि मेरी 25 वर्ष पूर्व कही गयी बात सत्य हुई। जंगल में मोर नाजा किसने देखा। उसका निदान क्या? आप द्वारा सुझाया गया और वह कितना सार्थक सिद्ध हुआ। विस्तार पूर्वक लिखे ताकि आप को भलीभांति जाना जा सके। साईकिल टैक्स के बारे में आप सदा लिखते हैं। क्या यह मात्र किसानों की सवारी है। यह गरीब कामगार का सत्ता यात्रा का साधक है। किसानों की दुहाई दी जाती है, परन्तु

उसका लाभ बड़े–बड़े जमींदारों को टैक्स छूट के रूप मिलता है उसकी आड़ में घुसखोरी, हेराफेरी को छुपाया जाता है। जैसे कि श्री लालू प्रसाद यादव ने नौ लाख की अतिरिक्त आय का विवरण न्यायालय में पेश किया। अभियोग में छुटकारा मिला। मुख्यतया सभी प्रकार की छूट बन्द होनी चाहिए। समस्याओं के मूल पर कुठाराघात होना चाहिए न कि (पेड़ की शाखाओं) की कतरण की भांति। आप अपने गंभीर विचार एवं समस्याओं का समाधान भी लिखे। मात्र प्रश्नकर्ता न बने रहे। तभी ज्ञानतत्व सार्थक भूमिका निभा सकेगा। जो चले गये उनके कार्यों का आदर सत्कार और सम्मान हृदय कपाटों में होना चाहिए। परन्तु आचरण तो तत्कालीन लोगों पर निर्भर करेगा। सामाजिक लाभ तो आपसे अब मिलता है न कि पूर्वजनों के गुणगान से। सभी चाहते हैं (मेरे समेत) कि एक और गांधी होना चाहिए, परन्तु मैं गांधी नहीं बनना चाहता। भीरू हूं। स्वादू हूं। साधू नहीं।

उत्तरः– मैं जो भी लिख रहा हूं वह अनुपयोगी होते हुए भी आप पढ़ रहे हैं यह भी मेरे लिए आत्म संतोष का विषय है। गांधी जी की मृत्यु के पश्चात उनके चिन्तन, निष्कर्ष और आचरण के परिपेक्ष्य में हमें मार्गदर्शन मिलता रहे यही उनसे अपेक्षा है।

लगता है कि आपने वानप्रस्थ का अर्थ ठीक से नहीं समझा। विनोबा जी का मौन क्या था और किन स्थितियों में था वह मेरी टिप्पणी का विषय नहीं। मैं तो सिर्फ इतना जानता हूं कि अपने गृहस्थ आश्रम के सैकड़ों कार्यों चिन्ताओं से मोड़कर अपने अधिकतम चिन्तन और सक्रियकता को समाज की ओर मोड़ सकूं। आप मेरे वानप्रस्थ को रणछोड़ वानप्रस्थ मनाने की भूल न करें।

आपने पूछा कि जंगल में मोर नाचा किसने देखा? वह जंगल का नाच हमारी प्रैक्टिस थी। अब शीघ्र ही शहर में दिखने लगेगा तब परिणाम मिलेगा। आपने लिखा कि सभी दूसरों से अपेक्षा करते हैं, किन्तु अपनी ओर नहीं देखते। मैंने तो किसी दूसरे से अपेक्षा नहीं की है, किन्तु आप मुझसे जैसी अपेक्षा करते हैं उसका एक छोटा अंश भी आप कर सकें तो हमें बहुत सहायता हो सकती है।

(ज) श्री नरेन्द्र दवे, महाराष्ट्र

प्रश्न– आप गांधी की प्रशंसा बहुत करते हैं। क्या कारण है?

उत्तर– मैं गांधी का प्रशंसक हूं। मैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का प्रशंसक हूं। गांधी की नीतियॉं सिर्फ भारत के लिए ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए आदर्श है। संघ के लोगों का त्याग, बलिदान भी प्रशंसनीय रहा है। गांधी के बाद गांधीवादियों की नीतियां लगातार नीचे की ओर गई, क्योंकि सर्वोदय ने संघर्ष का मार्ग छोड़कर पलायन का मार्ग पकड़ लिया। संघ का चरित्र जो इतना ऊंचा था वह राजनीति में सक्रियता के कारण गिरता गया। यदि संघ और सर्वोदय बैठकर ठीक दिशा में सोचते तो शायद कुछ मार्ग निकलता, किन्तु वैसा नहीं हो सकता, क्योंकि दोनों के पास विचार शून्यता हो गयी।

पिछले एक डेढ़ सौ वर्षों में दो ही प्रमुख विचारक हुए (1) मार्क्स (2) गांधी। लोहिया जी, दीनदयाल उपाध्याय तथा जय प्रकाश नारायण जी भी कुछ स्वतंत्र चिन्तन की ओर चले किन्तु मार्क्स और गांधी स्थित रहे। मार्क्स का परिणाम हुआ सत्ता के केन्द्रीयकरण और गांधीवाद का परिणाम होता सहभागी लोकतंत्र। आप परिणामों पर विचार करिये। मार्क्सवाद ने दुनिया को क्या दिया? आज पूरे विश्व में अमेरिका और इस्लाम ही पूरी ताकत से उभर रहे हैं अमेरिका को मजबूत बनाने का एक मात्र श्रेय वामपंथियों को है। जिन्होंने अमेरिको के विरूद्ध कोई साक्षी ताकत बनने ही नहीं दी। यदि रूस और चीन भी अपनी चाल नहीं बदलते तो उतना भी नहीं बचते जो हैं आज रूस और चीन फिर से मजबूत होने लगे हैं, क्योंकि उन्होंने मार्क्सवाद को छोड़कर यथार्थवाद का मार्ग पकड़ा है। ऐसी हालत में यदि दुनिया में विचार के नाम पर गांधी के समान ही कोई और विचारक का नाम रखें तो मैं विचार करूंगा। क्योंकि मार्क्सवाद के परिणामों के बाद तो गांधी ही अकेले दिखते हैं।

(झ) श्री वेद व्यथित, अनुकम्पा, 1577 सेक्टर – 3 फरीदाबाद हरियाणा।
प्रश्न– विगत कई वर्षों से ज्ञानतत्व का अध्ययन मनोयोग से कर रहा हूं। आप निरंतर व्यवस्था में अनुसंधानरत हैं आप कठिनतम परिश्रम भी कर रहे हैं। विभिन्न मुद्दों पर आपका विश्लेषणात्मक विमर्श भी गंभीर होता है। आप नये ढंग से सोचते हैं, परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आता है कि आप जैसा विचारक भी गुजरात पर आकर भटक जाता है तथा प्रचलित भ्रांति के अनुसार ही आपका मन भी सक्रिय हो जाता है।

आपका ज्ञान तत्व अंक 135 का सोहराबुद्दीन विषयक विश्लेषण उस समय तो लागू होता जब आपका लोक स्वराज्य मंच का कानून लागू होता। यह तो मात्र मानवाधिकारवादियों की रट जैसा है। वर्तमान कानून में आपके पास सोहराबुद्दीन जैसे व्यक्ति से समाज को निजात दिलाने का क्या उपाय है। मात्र आदर्श की बात करके दिवा स्वप्न दिखाकर संवेदनशील मुद्दों का हल नहीं है। और यदि आप की व्यवस्था आने तक लोग यों ही ऐसे लोगों से त्रस्त रहे और कानून पालन की बात करते रहे तो क्या आप इसे उचित कहेंगे।

आतंकी या मानवता विरोधी के साथ कानून पालन कर सजा देने से ही देश की स्थिति ऐसी हो गयी है। अपराधी बार–बार अपराध करता है, जेल जाता है और छूट जाता है और फिर आकर ताल ठोककर अपराध करता है तथा मंत्री पद तक प्राप्त करा लेता है। क्योंकि कानून उसे सजा देने में असमर्थ सिद्ध होता है। जिसके कारण जनता पिसती है, सड़क पर आती जाती है। सरेआम लूट की जाती है। पर जब कोई साहसी पुलिस अधिकारी जनता को न्याय दिलवाता है तो उनके यानी अपराधियों के लोग कानून का ही सहारा लेकर उसे जेल भेजवा देते हैं जिनसे अपराधी वसूली करता था उनके मारने पर उतारू हो जाता था उनसे पूछो नरेन्द्र मोदी या बंजारा का कानून सही है या आपका प्रचलित कानून। निश्चित है इसमें कुछ गलत भी हो सकता है। परन्तु उसका अन्तर किया जा सकता है।

मेरा निवेदन है कि आप संघ विरोध या वामपंथ समर्थन या विरोध या राजनीतिक विरोध जैसी दुकान सजाकर माल न बेंचे। हमें ठोस कार्य सोचना चाहिए। इस विचित्र और भगवान भरोसे चलने वाले देश में सुव्यवस्था लाना आसान नहीं है, परन्तु नामुमकिन नहीं है।

इसी आशा से आपको नैतिक समर्थन देना मानवता भारतीय होने के नाते अपना कर्तव्य मानता हूं, परन्तु आप इस तरह की मनोग्रन्थि से समय–समय पर विभिन्न कारणोवश प्रकट होती रहती है उससे छूटकारा पाना मेरे विचार में आवश्यक है। आलोचना से कार्य बड़ा है।
आपका आलोचना से अलग हटकर बड़ा कार्य क्या है। उसके क्रियान्वयन की क्या योजना है हमें वह चाहिए। आप आलोचना कार्य योजना दोनों को पृथक करें। मेरा ज्ञानतत्व का सदस्यता शुल्क कब पूरा हो रहा है लिखें।
उत्तर– यह सच है कि मैं संघ, नरेन्द्र मोदी और गुजरात प्रकरण पर आपसे मतैक्य नहीं रखता, किन्तु यह तय करना अभी बाकी है कि ग्रन्थि के शिकार आप हैं कि मैं। जो आपने लिखा उससे मेरी सहमति है। सिर्फ आश्वासन देते रहने से कुछ नहीं होगा। अपराधी बार–बार अपराध करता है और नेता बन जाता है। कानून उसे समाज देने में असमर्थ है। ऐसी स्थिति में यदि गुजरात में नरेन्द्र मोदी आपके आदर्श हैं तो सीवान में शोहराबुद्दीन को कैसे आदर्श नहीं मानेंगे। कौन सा थर्मामीटर एक को अच्छा और दूसरे को बुरा घोषित करेगा। आपने सब कुछ लिखने के बाद यह क्यों नहीं लिखा कि ऐसे कानूनों को बदलना इसका समाधान है या अराजकता। मैंने आतंकवाद की परिभाषा में लिखा था कि जो सम्बद्ध लोगों के विरूद्ध हिंसा करे वह अग्रवादी है और जो असंबद्ध लोगों की हिंसा करे वह आतंकवादी है। नक्सलवाद आतंकवादी न होकर उग्रवाद है। संघ का कार्य भी उग्रवाद है आतंकवाद नहीं। किन्तु मुस्लिम आतंकवाद असंबद्धों की

हत्या करने के कारण आतंकवाद है उग्रवाद नहीं। यदि गुजरात में मुसलमानों के पक्ष में प्रदर्शन कर रहे बेगुनाह लोगों को बड़ी संख्या में मारा जाता है तो उग्रवाद होता आतंकवाद नहीं किन्तु घरों में छिपे हुए बेगुनाह असंबद्ध मुसलमानों की हत्या सीधा–सीधा आतंकवाद है जिसके कलंक से मोदी जी बच नहीं सकते।

शोहराबुद्दीन सरीखे प्रकरण को मजबूरी माना जा सकता है आदर्श नहीं। आदर्श स्थित तो होगी कानूनों में संशोधन परिवर्तन। आप जैस विद्वान मजदूरी को ही आदर्श मानने की भूल कर रहे हैं क्या अब भारत में ऐसी विकट स्थिति आ गयी है कि नियमों कानूनों में परिवर्तन संभव नहीं है? क्या आप आश्वासन दे सकते हैं कि संघ और मोदी का सारा प्रयत्न सत्ता के लिए न होकर हिन्दू सुरक्षा के लिए है। यदि लकड़ी का घोड़ा उड़ेगा कहकर भीड़ जुटाने के बाद दवा बेचना ही संघ का उद्देश्य है तो कम से कम मैं तो इसके लिए तैयार नहीं।

मैं अब भी समझता हूं कि सामाजिक हिंसा का प्रोत्साहन गलत है और संवैधानिक हिंसा को मजबूत करना चाहिए। अपराधियों को न्यायिक प्रक्रिया से दण्ड मिले यह अल्पकालिक मजबूरी है और अपराधी को भीड़ द्वारा पीट–पीट कर मार डाला जाये यह अनुचित है।

आपने मेरी योजना का विस्तार जानना चाहता है। मेरी योजना का पहला चरण है सही का समर्थन और गलत की आलोचना। संघ द्वारा समान नागरिक संहिता, अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक भावना की समाप्ति और धर्म परिवर्तन कराने पर रोक को आधार बनाकर जनमत जागरण में मेरा पूरा–पूरा समर्थन है और हिंसक टकराव, घृणा का विस्तार, भावनात्मक ध्रुवीकरण से मेरा विरोध है। मैं समस्या का समाधान चाहता हूं सत्ता का खेल नहीं। या तो संघ अपनी नीतियों बदलेगा अन्यथा हम आप सब मिलजुल कर संघ को बदल देंगे ऐसा प्रयत्न है।

(ट) श्री पंचम भाई हस्तेड़िया, हस्तेड़ा, राजस्थान।

प्रश्न– मैं लम्बे समय से ज्ञानतत्व भी पढ़ता हूं और सहमत भी हूं। मैं बनवारी लाल जी शर्मा और ब्रह्मदेव जी शर्मा से भी जुड़ा हूं। मुझे आप तीनों के कार्यों से सहमति है। ब्रहमदेव जी शर्मा ग्राम स्वराज्य का जो अभियान चल रहे हैं वह भी बहुत उपयोगी है और बनवारीलाल जी शर्मा का विदेशी कम्पनी मुक्ति अभियान भी। आप जो ग्यारह समस्याओं के समाधान की बात कहते हैं वह तो उपयोगी है ही। आप सब बैठकर बात तो करिये। तेरह मार्च को राजघाट उपवास में ब्रहमदेव जी थे। आप और बनवारी लाल जी भी आते तो बहुत अच्छा होता।

उत्तर– पच्चासी वर्ष की उम्र में भी आपके मन में जो छअपटाहट और पीड़ा है उसे मैं समझता हूं। बनवारी लाल जी और ब्रहमदेव जी के भी ईमानदार प्रयत्नों के वि☺ मैं नहीं। मुझे इन सबकी नीयत पर पूरा–पूरा विश्वास है, किन्तु सक्रियता का संबंध नीयत के साथ–साथ नीतियों से भी जुड़ा है। अनेक साथी वर्षों से पूरी ईमानदारी से शराबन्दी में लगे हैं। क्या हम भी अपने प्रयत्न छोड़कर उसमें लग जायें? जो लोग व्यवस्था परिवर्तन में सक्षम नहीं हैं वे यदि शराब बंद करावें तो वे कोई गलत नहीं कर रहे हैं। किन्तु जो लोग व्यवस्था परिवर्तन में सक्षम भूमिका अदा कर सकते हैं तो वे यदि शराब बन्दी सरीखा सुधार या सेवा कार्य करें तो अवश्य ही चिंता होती है। लंका पुल निर्माण में नल, नील या हनुमान गिलहरी या सामान्य बन्दर की भूमिका अदा करें तो वे राम का आशीर्वाद नहीं पा सकते भले ही उससे कम प्रयत्न में गिलहरी को वह प्रशंसा मिल जावे।

विचारणीय प्रश्न यह है कि अंग्रेजों की गुलामी के समय भी अनेक समाज सुधारकों ने अंग्रेजों के विरूद्ध स्वतंत्रता संघर्ष से दूर रहकर भी समाज सुधार के कार्य अंग्रेज सरकार से कराये और उन कार्यों के लिए अंग्रेजों की प्रशंसा भी की। ऐसे समाज सुधारकों की नीयत ठीक होते हुए भी वे स्वतंत्रता संघर्ष से दूर रहे। प्रश्न उठता है कि

हम तीन लोग प्रयत्न कर रहे हैं जिन्हें मिलकर प्रयत्न करना चाहिए। मेरा मानना है कि भारत में लोकतंत्र की परिभाषा लोक नियुक्त तंत्र है उसे लोक नियंत्रित होना चाहिए। राज्य शक्ति पर समाज शक्ति की वरीयता को संवैधानिक अधिकार मिले। ब्रहमदेव जी शर्मा यह मानते हैं कि परिवार गांव और जिलों को संवैधानिक अधिकारों की लड़ाई जीतना असंभव कार्य है। इसलिए भारतीय संविधान के तिहत्तरवें और चौहत्तरवें संशोधन द्वारा भारतीय संविधान ग्राम सभाओं को जो कानूनी अधिकार देता है उन्हीं से काम चलाया जावे। सर्व विदित है कि तिहत्तरवां और चौहत्तरवां संविधान संशोधन ग्राम सभा को पच्चीस–तीस मामलों में कार्यपालिक अधिकार देता है, किन्तु एक भी विधायी अधिकार नहीं देता। इन्दौर में एक प्रसिद्ध गांधीवादी नरेन्द्र दुबे जी ने तो पंचायतों को अधिकार देने का ही विरोध किया था। शर्मा जी के इस संबंध में प्रयत्न सराहनीय हैं किन्तु यदि शर्मा जी सरीखा विद्वान विधायी अधिकारों की जगह पर कार्यपालिका अधिकारों को ही ग्राम स्वराज्य मान ले तो हमें और विचार करना चाहिए बनवारीलाल जी शर्मा का मानना है कि सीानीय वस्तुओं के उपयोग से ग्राम स्वराज्य आ जायेगा। बनवारी लाल जी के प्रयत्न सेवा कार्य में शामिल है या समाज परिवर्तन में भी शामिल है, किन्तु व्यवस्था परिवर्तन से इनका कोई संबंध नहीं। इन प्रयत्नों से समाज की अवस्था तो बदल सकती है, व्यवस्था नहीं। विचार करिये कि वर्तमान भारत में भारत को भारतीय संविधान चाहिए या भारतीय साबुन। मैं भारतीय साबुन और शीतल पेय के संघर्ष के वि☺ नहीं क्योंकि अपनी क्षमता अनुसार वे जो भी कर रहे हैं वह गलत नहीं। किन्तु मेरी ऐसी मान्यता है कि मैं स्वदेशी शासन व्यवस्था, स्वदेशी परिवार व्यवस्था, स्वदेशी संविधान व्यवस्था का संघर्ष निर्णायक स्थिति तक पहुंचाने की परिणाम मूलक टीम बनाने में लगा हूं तो आप इस काम को स्वदेशी शीतल पेय के साथ जोड़ने की भूल न करें। बनवारी लाल जी प्राथमिकताओं को समझते हैं। यदि उन्हें विश्वास हो गया कि विदेशी लोकतंत्र से मुक्ति का संघर्ष मजबूत हो रहा है तो वे स्वयं सोचेंगे। वे गुमराह नहीं है।

ब्रहमदेव जी शर्मा को समझाना अवश्य कठिन है। महापुरूषों की यह खास विशेषता होती है कवे यदि दस–बीस वर्षों तक किसी एक लीक पर चल लें तो उन्हें भूल स्वीकार करने में कठिनाई होती है। बनवारी लाल जी शर्मा के सामने कोई भ्रम नहीं है, किन्तु ब्रहमदेव जी के सामने तो भ्रम है। धूर्त राजनेताओं ने रस्सी फेंककर शर्मा जी को संतुष्ट कर दिया कि हमने सांप फेक दिया है। भ्रमवश शर्मा जी सारे भारत में संदेश देते घूम रहे हैं कि उन्होंने फेंका हुआ सांप अपनी आंखों से देखा है। अब आप बताइये कि मैं क्या करूं। बनवारी लाल जी शर्मा के आंदोलन में जुड़ जाऊं या शर्मा जी के समान संतुष्ट होकर राजनेताओं के गुणगान करने लगूं। मैं अब तक किसी आंदोलन में सक्रिय नहीं हूं किन्तु इतना अवश्य है कि यदि लोकतंत्र की वर्तमान परिभाषा लोक नियुक्त तंत्र को बदलकर लोक नियंत्रित बनाने का आंदोलन होता है तो मैं उसमें सहयेाग करूंगा।

खुशी की बात है कि बीस नवम्बर दो हजार सात को माननीय ठाकुरदास बंग ने ऐसे आंदोलन की घोषणा का मन बनाया है। आदरणीय बंग जी, प्रभाष जोशी जी, कुलदीप नैय्यर जी तथा चुन्नी भाई वैद्य जी ने मिलकर बीस नवम्बर को सेवाग्राम आश्रम में लोक स्वराज्य सम्मेलन रखने की घोषणा की है। उस दिन किसी आंदोलन की नींव रखी जा सकती है। सम्मेलन में अब तक की जानकारी इस प्रकार है। लोक स्वराज्य सम्मेलन दो मुद्दों पर केन्द्रित होगा (1) प्रतिनिधि वापसी, संवैधानिक व्यवस्था (2) सीानीय ईकाइयों को संवैधानिक अधिकारों का संवैधानिक विभाजन। दूसरे सूत्र को और स्पष्ट करें कि किस तरह संविधान में राज्य और केन्द्र की सूचियां है जिस तरह अन्य ईकाइयों की भी हों।

सम्मेलन दो मुद्दों पर ही केन्द्रित होगा और आन्दोलन की रूपरेखा बनायेगा। आंदोलन पूरी तरह अहिंसक होगा। आंदोलन में कोई संगठन ,संगठन के रू॰ में शामिल

नहीं होगा। जो भी शामिल होगा वह व्यक्ति के रू‍प में होगा। जो भी व्यक्ति दो सूत्रों पर सहमत होगा उसके अन्य कार्यों से आंदोलन का समर्थन या विरोध नहीं होगा। आंदोलन में शामिल कोई व्यक्ति अन्य, संस्थाओं में कार्य करने के लिए स्वतंत्र होगा। इस तरह सेवा ग्राम में बीस नवम्बर के सम्मेलन में मैं रहूंगा ही। आप सब लोग रहेंगे ही। बैठकर आगे चर्चा होगी।

राजघाट उपवास में मैं दोनों दिन गया था। आपका भी भाषण सुना था। भीड़ में मिलना नहीं हुआ।

(ठ)दशा और दिशा

आज की जो दशा है उसके लिए हम सभी जिम्मेंदार, चाहे जनता हो और चाहे परिवर्तन के राही। आज जो घट रहा है, क्या हमने उसका सामूहिक विरोध किया? बल्कि हम उसी में रच–बस गये। अपना रास्ता छोड़कर दूसरों का गलत रास्ता अपना लिया, जिसको षड़यंत्रपूर्वक हम पर लाद दिया गया, क्योंकि हमने कोई प्रतिरोध नहीं किया, गधे की भांति लद गये। साम्राज्यवादी व पूंजीवादी शक्तियां आई और अपना उल्लू सीधा करने में काययाब हुई। अब हम उनके भक्त बने हुए हैं।

दयानन्द, विवेकानन्द, गांधी जी, अरविन्द, भगत सिंह, सुभाष आदि महापुरूषों ने आकर अपना–अपना काम किया। उस समय हम उनकी वाहवाही की, परन्तु उनके जाने के बाद कुछ नहीं कुण्डली लगाकर बैठ गये, जैसे हमें स्वयं कुछ नहीं करना है, दूसरे ही हमारे लिए करेंगे। परन्तु ऐसा कभी नहीं हुआ और न होगा। हम जो करेंगे, वहीं हमें मिलेगा। केवल महापुरूषों का नाम लेकर हम अपना बचाव नहीं कर सकते। बुराईयों को हमें स्वयं दूर करना होगा, चाहे वह अपनी हो अथवा दूसरों की। सब राम, कृष्ण नहीं हो सकते, हम सबको मिलकर गोवर्धन पहाड़ को उठाना पड़ेगा। यह हमारी संस्कृति है, हमें मिलकर स्वावलम्बी, परस्परावलम्बी जीवन जिया है जिसको लम्बी दास्ता के बाद भूल बैठे

आजादी के बाद तो मस ब कुछ खो बैठे, महापुरूषों ने जो रास्ता दिखाया था, उसको निहित स्वार्थवश भूल गये। अपने ही लोगों ने हमें ठग लिया। हमारी गलत मान्यताएं, भ्रम व भूलें कि बड़े मस ब बेटे हमारा भला करेंगे, हमें ले बैठा, कहीं का न छोड़ा। परन्तु अब आप क्या करेंगे? कुछ नहीं, हमारा तो किसी प्रकार अभी काम चल रहा है, भला हो रहा है। दूसरों की परेशानियों से हमें क्या लेना–देना।

विशेषतौर पर गांधी के अनुयायी आज खनक की आवाज सुनकर केवल कौंध रहे हैं, परन्तु अब अधिक क्या कर सकते हैं, जब चिड़िया सब खेत चुग गयी, अब क्या बचा है, जिसको बचाना चाहते हैं। देश की अस्मत ही लूट गयी। प्रतिदिन हमारी बहनों के साथ बलात्कार हो रहे हैं, किसानों व मजदूरों पर पुलिस द्वारा गोलियां चलायी जा रही है। दहेज के कारण नवयुवतियां को जलाया जा रहा है, कर्ज के बोझ से लदकर किसान आत्म–हत्या कर रहे हैं। कृषि को लाभ का व्यापार बना दिया गया। भूमि की सीलिंग समाप्त करके कम्पनियों द्वारा बड़े–बड़े फार्म हाउस बनाकर खेती की योजना तैयार की जा रही है। जमीन को और अधिक जहरीली बनाने हेतु 2004 का नया बीच एक्ट आ रहा है, प्रत्येक किसान को हाईब्रीड कर्ज का प्रयोग करना होगा, वर्ना चोर, लुटेरों की तरह बीज इंस्पेक्टर किसानों को कभी भी तलाशी लेकर उन पर मनमाना भारी जुर्माना करेंगे। जैविक खेती करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

सादा नमक बनाने के लिए डांडी यात्रा निकालकर गांधी जी ने सत्याग्रह किया था तथा ब्रिटिश शासन को झुकना पड़ा था। परन्तु हमारे देशी शासन द्वारा आयोडीन नमक के नाम पर बहुराष्ट्रीय कम्पनी को लाभ पहुंचाने के लिए जिस सादे नमक के लिए हम सबने सत्याग्रह करके उसको प्रतिबंधित होने से बचाया था। अब उसको गांधी जी के ही तथा कथित कांग्रेस अनुयायियों की सरकार जिसने अभी हाल में डांडी यात्रा निकालकर उपवास किया था, पुनः सादे नमक को प्रतिबंधित कर दिया है। अब हमारी आंख खुल

जानी चाहिए कि न केवल साम्प्रदायिक भाजपा, बल्कि कांग्रेस आदि जातिवादी व अल्पसंख्यकों की तुष्टीकरण की नीतियों पर चलने वाली सभी राजनैतिक जमातें एक ही रंग में रंगे हुए सियार हैं तथा साम्प्रदायवादी साम्राज्यवादी एवं पूंजीवादी ताकतों की सरकार है।

अब देश को यदि साम्राज्यवादी, पूंजीवादी, जातिवादी, सम्प्रदायवादी ताकतों से बचाना है तो मस ब हिन्दू, मुस्लिम, सिख व ईसाई भाईयों को एक साथ जुट होकर काम करना होगा।, जाति, धर्म की बात करने से पहले हमें इंसान बनना होगा। मानवता को धारण करने के पश्चात ही हम अच्छे हिन्दू, सच्चे मुसलमान, सच्चे सिख व सच्चे ईसाई बन सकते हैं, देश रहेगा तो सब रहेगा, परन्तु यदि देश का नौजवान, नवयुवती नहीं रहे तो आगे कौन बचेगा और देश कहां जायेगा।

अतः हर जाति व मजहब के लोगों को पहले हिन्दुस्तानी के जज्बे से रू–ब–रू होकर चलना पड़ेगा, अन्यथा आतंकवादी, उग्रवादी, अपराधी, माफिया, पूंजीवादी व साम्राज्यवादी लुटेरे हमें कहीं का न छोड़ेंगे। अब हमें उन सबके खिलाफ जिहाद व संघर्ष करना होगा।

इससे पहले यह सोचना होगा कि हमें देश में क्या परिवर्तन करना है, कैसा समाज बनाना है? आज लोकतंत्र के नाम पर तंत्र लोक पर हावी है। अतः ऐसी सामाजिक व राजनैतिक परिस्थितियां पैदा करनी होगी, जिससे देश का संविधान बदले कम से कम हमारे प्रतिनिधि जों की पांच साल के ठेकेदार बनकर जाते हैं उन्हें ठीक प्रकार से काम न करने पर वापिस बुलाया जा सके, नीति निर्देशक सिद्धान्तों को आवश्यक रूप से लागू किया जा सके। सभी को जीने के बुनियादी अधिकार मिले, शोषण, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार समाप्त हो और सत्ता का विकेन्द्रीकरण।

(ड)पत्रोत्तर

श्री चितरंज भारती, क्वार्टर सं.– 246 एचपीसी न्यू टाउनशिप, पोस्ट– पंचग्राम असम– 788802, दूरभाष – 03845–273173

''ज्ञानतत्व'' का अंक नियमित मिल रहा है, मैं आपके विचार एवं विचार–मंथन से पूरी तरह सहमत हूं, किन्तु एक तो दूरी, दूसरे छोटी सी सरकारी नौकरी..... मैं आपको सहयोग नहीं कर पा रहा हूं, जिसका मुझकों खेद है, तथापि आप लोग जो कार्य निःस्वार्थभाव से कर रहे हैं, उसके प्रति मेरा पूर्ण समर्थन है। मुझे आपके विचारों से नई प्रेरणा तथा अंर्तदृष्टि मिलती है। मेरी हार्दिक इच्छा बस यही है कि मैं संत समान श्री बजरंग मुनि जी के दर्शन कर सकूं, देखें कि यह इच्छा कब पूर्ण हो पाती है?

अंक 131 में श्री अशोक गदिया का लेख 'बस अब बहुत हो चुका' बहुत पसंद आया, ज्ञान तत्व की यात्रा अपनी मंजिल पर पहुंचे इसी शुभकामनाओं के साथ। तथा मैंने 100 रूपये का धनादेश भेज दिया है। ज्ञानतत्व मुझे नियमित मिलता रहा है, जिससे मेरे विचार परिपक्व तथा दृढ़ होते हैं। दुख तब होता है जब मैं आपको कोई सहयोग नहीं कर पाता। दूरी इसका प्रमुख कारण है।

मैं कभी दिल्ली आया, तो क्या एकाध सप्ताह के लिए आपके आश्रम में रह सकता हूं? मुझे श्रद्धेय बजरंग मुनि से मिलने की हार्दिक इच्छा है।?

उत्तर– आपके द्वारा भेजे गये दो पत्र लगातार प्राप्त हुए, यह जानकर अत्यन्त हर्ष कि हुआ आप जैसे लोग इतने दूर होने के बावजूद भी इतने पास हैं और मेरे विचारों से अत्यन्त प्रभावित हैं। रही बात मेरे आश्रम में आने की तो यह तो आपका अपना आश्रम है यहां पर किसी भी छण आप आ सकते हैं, मुझे तो अत्यन्त खुशी होगी। तथा आपसे इन गंभीर विषयों पर चर्चा करने का भी अवसर मिलेगा।

''सब सुधरेगा तीन सुधारे, नेता, कर, कानून हमारे।

नोटः– प्रिय बन्धु,

आपको ज्ञान तत्व जाता रहा है। मिलता भी होगा और उपयोग में भी आता होगा।

आपका फोन नम्बर, कोड नम्बर, इण्टरनेट नम्बर यदि कोई हो तथा बेवसाइट तथा मोबाइल नम्बर हों तो भेजने की अत्यन्त कृपा करें जिससे सम्पर्क में बने रहने के लिए कोई असुविधा न हो और बराबर बातचीत होती रहे। श

यदि आपके कोई प्रश्न, प्रतिक्रियाएं या कोई सुझाव भी हों तो अवश्य भेजिए जिससे भविष्य में सक्रियता बनी रहे। आशा है कि आपका उत्तर अवश्य मिलेगा।

आपका
बजरंग मुनि